कोटा के चोमा मलियान की ग्राम पंचायत द्वारा आयोजित महाशिवरात्रि मेले के उद्घाटन के दौरान माननीय अध्यक्ष के उपयोग हेतु प्रारूप भाषण

———

21 **फरवरी**, 2020
चोमा मलियान, **कोटा**

———

आज मैं अपनी बात का आरंभ 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' के दिव्य उद्घोष के साथ करना चाहता हूँ। शास्त्रों में कहा गया है कि सत्य ही शिव है और शिव ही सुन्दर है।

साथियो, आज महाशिवरात्रि के इस पावन अवसर पर आप सभी के बीच आकर चोमा मलियान की ग्राम पंचायत द्वारा आयोजित 15 दिवसीय मेले में शामिल होना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। लोगों में उत्साह और उत्सव के इस माहौल से हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत में उनकी आस्था और विश्वास का पता चलता है।

सबसे पहले मैं आप सभी को महाशिवरात्रि की शुभकामनाएं देता हूं और कामना करता हूँ कि भगवान शिव हम सब पर अपना आशीर्वाद बनाए रखें और हमें अच्छा स्वास्थ्य, सुख-समृद्धि और सौभाग्य का वरदान दें।

जैसा कि हम सभी जानते हैं, भगवान शिव देवों के देव-महादेव हैं। वे समस्त शक्तियों और ऊर्जा का स्रोत हैं। सृष्टि का निर्माण करने, उसे बनाए रखने और विनाश करने वाले दिव्य त्रिदेव, ब्रह्मा, विष्णु और महेश का अभिन्न अंग हैं।

महाशिवरात्रि भगवान शिव और माता पार्वती के विवाहोत्सव के रूप में मनाई जाती है और वास्तव में यह जागरण की रात होती है। यह एक ऐसा शुभ अवसर है जब हम स्वयं को सर्वशक्तिमान के चरणों में आत्मार्पित करते हैं और उनका दिव्य आशीर्वाद ग्रहण करते हैं।

पूरे भारत में महाशिवरात्रि हर्षोल्लास और धार्मिक उत्साह के साथ मनाई जाती है।

इस दिन लोग व्रत रखते हैं, भजन करते हैं और जगह-जगह मेलों का आयोजन किया जाता है। अब महाशिवरात्रि दुनिया के कई हिस्सों में बहुत श्रद्धा के साथ मनाई जाती है।

भगवान शिव में अनेक गुणों का संगम है। वह महाकाल, रुद्र, विनाशक होने के साथ-साथ भोलेनाथ और शंकर भी हैं जो दूसरों के खुशी के लिए अपने सुख का त्याग करने के लिए तत्पर रहते हैं। उन्हें महायोगी और नटराज के रूप में भी पूजा जाता है।

हिंदू पौराणिक कथाओं में बताया गया है कि भगीरथ अपने पूर्वजों के उद्धार के लिए गंगा नदी को धरती पर लाये थे।

भगीरथ के ऐसा करने पर भगवान शिव ने गंगा नदी के वेग को कम करने के लिए वेगमयी गंगा को अपने घनी जटाओं में बांध कर धरती की रक्षा की।

उन्होने देवों और असुरों को बचाने के लिए समुद्र मंथन से निकले हलाहल विष को पिया, जिसके कारण उन्हें नीलकंठ के नाम से जाना जाता है।

भगवान शिव का जीवन सादगी और अनुशासन का जीवन्त उदाहरण है। कहा जाता है कि 'ॐ नमः शिवाय' का जप करने से न केवल भगवान शिव के चरणों में जगह मिलती है, बल्कि इससे कुंडलिनी जागृत होती है। यह आत्मा के परमात्मा से मिलन का मार्ग है।

महाशिवरात्रि के इस शुभ अवसर पर हम मिलकर भगवान शिव से प्रार्थना करते हैं कि वे हमें अपने दु:ख-सुख एक-दूसरे के साथ बाँटने, समाज में अन्याय और भेदभाव के विरुद्ध संघर्ष करने और सभी जीवों के प्रति करूणा भाव रखने का आशीर्वाद दें।

ईश्वर ने हमें मानव जन्म देकर हम पर बहुत बडी कृपा की है और यह हमारा कर्तव्य है कि हम उन्हें निराश न करें। मानव के रूप में यह हमारा परम कर्तव्य है कि हम ज़रूरत के समय अपने साथियों को संबल प्रदान करें।

हममें से कई लोग मानव जीवन के सार को भूल बैठे हैं। भगवान शिव हमें स्वार्थ की राह को त्यागकर परमार्थ की राह पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं। उन्होंने विष का सेवन इसलिए नहीं किया था कि उन्हें विष पसंद था। उन्होंने विष का सेवन दूसरों को बचाने के लिए किया था।

हमें भगवान शिव के बारे में सुनी हुई कथाओं को याद करना चाहिए और अपने जीवन को समाज कल्याण के लिए समर्पित कर देना चाहिए।

महादेव के बारे में हमने अपने धर्मग्रन्थों और पौराणिक कथाओं में जो सुना और सीखा है, उससे हमारे जीवन और सम्पूर्ण समाज की विचारधारा को एक दिशा मिलती है।

आज जरूरत इस बात की है कि हम इस सुंदर धरती पर अपने जन्म के प्रयोजन को समझने का प्रयत्न करें। हमारा दायित्व है कि हम पृथ्वी को प्रदूषण और वैश्विक तापमान के आसन्न खतरों से बचाएं। यदि हम अपनी आवश्यकताओं को और उपभोग की प्रवृत्ति को नियंत्रित कर लें, तो धरती माँ को कुछ राहत मिलेगी। हमारा अपना जीवन भी सार्थक होगा।

भारतीय संस्कृति में वेद और उपनिषद जैसे हमारे प्राचीन धर्मग्रन्थों में अन्य बातों के साथ अध्यात्म और नैतिकता का ज्ञान दिया गया है। पंरतु आज के समय में, सदाचार और नैतिकता में तेज़ी से गिरावट आ रही है जो कि एक गंभीर चिंता का विषय है।

निस्संदेह टेक्नोलोजी सर्वव्यापी हो गई है। परंतु हमें याद रखना होगा कि टेक्नोलोजी सिर्फ एक माध्यम है और इसकी अपनी सीमाएं भी हैं। अत: प्रेम, स्नेह, सहानुभूति, संवेदना, ईमानदारी, समझ, सत्यनिष्ठा, त्याग आदि जैसे मानवतावादी मूल्यों को तो हमें स्वयं ही आत्मसात् करना होगा। आज के दिन हम प्रार्थना करते हैं कि भगवान शिव हमें इन सद्गुणों से परिपूर्ण करें।

इस शुभ अवसर पर मैं आप सबको महाशिवरात्रि की शुभकामनाएँ देता हूँ और मेले की सफलता की कामना करता हूँ। मैं एक बार फिर मुझे यहाँ आमंत्रित करने के लिए आयोजकों को धन्यवाद देता हूँ।

अंत में मैं शिव-पार्वती के प्रचलित स्तुति के साथ अपनी बात समाप्त करता हूँ:-

"कर्पूर गौरम् करूणावतारम्
संसार सारम् भुजगेन्द्र हारम्।
सदा वसन्तम् हृदयारविन्दे
भवं भवानी सहितम् नमामि।।"